Date - 04/09/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. -I (Hons.)

Topic - Determinism and freedom: Spinoza

Scanned with CamScanner

नियतत्ववाद एवं स्वतंत्रता (Determinism and freedom)

स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही एकमात्र द्रव्य है और प्रकृति के साथ इसका तादात्म्य संबंध है। ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की सत्ता नहीं है। इनके संबंध में स्पिनोजा नियतिवादी हैं। परन्तु उनका यह नियतिवाद बाह्य नियतिवाद न होकर आंतरिक नियतिवाद है। ईश्वर में बाह्य नियतिवाद नहीं हो सकता क्योंकि -

(1) इससे ईश्वर में परतंत्रता का भाव उत्पन्न हो जाएगा।

(2) ईश्वर से बाहर किसी अन्य वस्तु का अस्तित्व ही नहीं है।

Scanned with CamScanner

स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर के कार्यों में आंतरिक नियतिवाद है, क्योंकि वह स्वयं संचालित नियमों के द्वारा ही शासित होता है। ईश्वर वही करता है जो उसके आंतरिक स्वभाव के अनुकूल है और इस रूप में ईश्वर स्वतंत्र है। यदि स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता अर्थात् कुछ भी कार्य करने की छूट मानी जाए तो फिर ऐसी स्थिति में ईश्वर को स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ईश्वर भी अपने आंतरिक नियमों से बंधा है। इस प्रकार यहां आंतरिक अनिवार्यता स्वतंत्रता को इंगित करती है। इस रूप में स्पिनोजा 'आत्म-नियतिवाद' (Self-determinism) के समर्थक हैं।

स्पिनोजा के नियतिवाद के अनुसार विश्व की सभी घटनाएँ और प्रत्येक वस्तु पहले से ही नियत है। जो कुछ भी विश्व में हो रहा है वह अवश्यम्भावी है। किसी संसारिक घटना का क्रम बदला नहीं जा सकता। जैसे त्रिभुज की परिभाषा से ही यह सिद्ध हो जाता है कि उसके तीनों कोणों का योग दो समकोण होता है। उसी प्रकार ईश्वर या द्रव्य से प्रत्येक वस्तु या घटना की उत्पत्ति स्वभावतः अनिवार्य रूप से होती है। स्पिनोजा के अनुसार प्रकृति में कहीं कोई आकस्मिकता नहीं है। ईश्वरीय प्रकृति की अनिवार्यता से सभी वस्तुएं अपने अस्तित्व और क्रिया में नियत हैं।

स्पिनोजा के अनुसार स्वच्छंदता के संदर्भ में स्वतंत्रता न तो ईश्वर में है और न ही मानव में। ईश्वर में स्वतंत्रता नहीं है क्योंकि वह अपने स्वभाव से विवश है। ईश्वर वर्तमान जगत के अतिरिक्त कोई अन्य दूसरा जगत उत्पन्न नहीं कर सकता। उसके अन्दर दूसरे या अन्य प्रकार के जगत को उत्पन्न करने की शक्ति या स्वतंत्रता नहीं है। वह केवल वर्तमान जगत को ही उत्पन्न कर सकता है क्योंकि यही उसके स्वभाव से अनिवार्यतः

Scanned with CamScanner

सिद्ध होता है। अतः जिस ढंग से और जिस क्रम से वस्तुएं उत्पन्न हुई हैं। उससे भिन्न ढंग और क्रम से वे पैदा नहीं हो सकती।

मनुष्य में भी इच्छा ~~स्वतंत्रता~~ स्वातंत्र्य नहीं है। उसके कर्म पूर्व नियत हैं। हमें जो कुछ भी सुख या दुःख प्राप्त होते हैं वह भाग्य के अधीन है। हम इसमें परिवर्तन नहीं कर सकते। अतः नियति की स्वीकृति ही हमारा कर्तव्य है। इच्छा स्वतंत्रता तो भ्रम (Free will is an illusion) है।

Scanned with CamScanner